Does he have the permission of the House for remaining absent from all the sittings of the House during the current Session?

(No hon. Member dissented)

MR. CHAIRMAN: Permission to remain absent is granted.

STATEMENT BY PRIME MINISTER

Recent visits to Germany, St. Petersburg, Evian and China by Prime Minister

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): सभापति जी, पिछले दो महीनों में मुझे जर्मनी, रूस, फ्रांस और चीन की अपनी यात्रा के दौरान विश्व के कई नेताओं से मिलने का अवसर मिला। मैंने दिनांक 27 से 30 मे तक जर्मनी की यात्रा की। उसके बाद मैं राष्ट्रपति पुतिन के निमंत्रण पर सेंट पीटर्सबर्ग के त्रिशताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए वहां गया। तत्पश्चात् मैं राष्ट्रपति शिराक के निमंत्रण पर एवियान में जी-8 देशों की विस्तृत वार्ता में शामिल हुआ। दिनांक 22 जून से 27 जून तक मैंने अलग से चीन की यात्रा की।

जर्मनी और चीन की मेरी यात्रांए द्विपक्षीय थीं जबकि रूस और फ्रासं की यात्रा महत्वपूर्ण घटनाओं के उपलक्ष्य में थी जिनमें केवल चुनिंदा देशों को ही आमंत्रित किया गया था। ये सभी यात्राएं यूरोप और एशिया के प्रमुख देशों के साथ हमारी चलती हुई बातचीत तथा अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत के बढ़ते हुए महत्व की मान्यता को दर्शाती हैं। मेरी इन यात्राओं से इन देशों के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंधों को मजबू करने और प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर हमारे दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का मौका मिला। ऐसी यात्राओं से हमें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के महत्वपूर्ण मुद्दों पर दूसरे देशों के विचारों को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिलती हैं।

जर्मनी की मेरी यात्रा चांसलर श्रोएडर के निमंत्रण पर थी जो उन्होंने अक्तूबर 2001 में भारत की अपनी यात्रा के दौरान मुझे दिया था। जर्मन नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार करने और उनमें तेजी लाने के बारे में मेरी उपयोगी बातचीत हुई। हमने क्षेत्रीय और अंतराष्ट्रीय मुद्दों पर भी विचारों का विस्तार से आदान-प्रदान किया। जर्मनी का मानना हैं कि आंतकवाद के खिलाफ विश्व स्तर पर दृढ़तापूर्वक कार्रवाई की जानी चाहिए चाहे वह कहीं भी हो और किसी के भी विरूद्व चलाया गया हो।

भारत और जर्मनी , दोनों ही व्यापार औ निवेश संबंधों में और तेजी लाने के इच्छुक हैं। मैंने भारत में निवेश के अवसरों तथा भारत और जर्मनी के बीच अनेक अनुपूरक पहलुओं पर प्रकाश डाला जिनसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग को अधिक बढ़ावा मिलता हैं। मुझे अनेक

जर्मन सांसदो, व्यापार प्रतिनिधियों तथा भारत-विद्याशास्त्रियों से मिलने का मौका भी मिला । म्यूनिख में मेरी बवेरिया के मंत्री- अध्यक्ष एडमड स्टोइबर के साथ लाभप्रद बातचीत हुई ।

जर्मनी जो यूरोपीय संघ में हमारे सर्वाधिक महत्वपूर्ण वार्ताकारों में से एक हैं तथा जो जी-8 देशों का सदस्य और इस समय सुरक्षा परिषद का सदस्य भी हैं, के साथ अपने लगातार बढ़ रहे उच्च-स्तरीय संबंधो को हम महत्व देते हैं । प्रति वर्ष शिखर बैठकें आयोजित करने के हमारे निर्णय के अनुरूप हम अगले वर्ष चांसलर श्रोएडर के भारत आगमन की प्रतीक्षा में हैं ।

सेंट पीटर्सबर्ग का 300वां वर्षगांठ समारोह शानदार एंव प्रभावशाली ढंग से मनाया गया । इस विशेष समारोह के लिए भारत को आमंत्रित करना भारत तथा रूसी संघ के बीच घनिष्ठ स्ट्रटेजिक संबंधों का द्योतक हैं । यह भी कहना उचित होगा कि इस समारोह में विश्व के प्रमुख नेताओं की इतनी बड़ी संख्या में भागीदारी रूस के महत्व तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रपति पुतिन के सम्मान की प्रतीक थीं ।

सेंट पीटर्सबर्ग की मेरी यात्रा के दौरान मुझे राष्ट्रपति पुतिन, फ्रांस के राष्ट्रपति शिराक, चीन के राष्ट्रपति हूं जिन्ताओं तथा ब्रिटेन के प्रधान मंत्री टोनी ब्लेयर के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने का अवसर मिला । संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बुश से भी मेरी अनौपचारिक बातचीत हुई ।

राष्ट्रपति पुतिन के साथ अपनी मुलाकात में हमने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया । हम, दोनों देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक बातचीत जारी रखने पर सहमत हुए । राष्ट्रपति पुतिन ने भारत के साथ संबंधों को और गहरा बनाने की रूस की प्रतिबद्वता को दोहराया । वार्षिक शिखर सम्मेलन की हमारी सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप, मुझे आशा हैं कि मैं रूस का निकट भविष्य में द्विपक्षीय दौरा करूगा ।

जी-8 के देशों के साथ व्यापक बातचीत के लिए कुछ चुने हुए विकासशील देशों को आमंत्रित करने की पहल के लिए मैंने राष्ट्रपति शिराक को धन्यवाद दिया । बहुध्रवीय विश्व के महत्व पर हमारी समान समझ थी जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र का पुनर्गठन करना जरूरी माना गया ।

प्रधान मंत्री ब्लेयर के साथ हुई बातचीत में हमने अपने द्विपक्षीय संबंधों के स्तर पर संतोष व्यक्त किया । प्रधान मंत्री ब्लेयर ने हमारी महत्वपूर्ण सुरक्षा चिंताओं के प्रति संवेदनशीलता और समझ-बूझ दर्शाई ।

चीन के राष्ट्रपति हूं जिन्ताओं के साथ मेरी मुलाकात में उन्होंने कहा कि चीन का नया नेतृत्व भारत के साथ मित्रता बढ़ाने पर बहुत बल देता हैं । हम इस बात पर सहमत हुए कि चीन और भारत, जो विश्व की कुल आबादी का एक तिहाई भाग हैं, को मिलकर प्रभावी ढंग से काम करना चाहिए ताकि 21वीं सदी को एशिया की सदी बनाया जा सकें ।

भारत उन 14 विकासशील देशों में से एक था जिन्हें एवियान में जी-8 देशों की विस्तृत वार्ता में आमंत्रित किया गया। इस वार्ता में स्वतंत्र रूप से तथा खुलकर बातचीत हुई जिसमें विभिन्न आर्थिक, विकास, पर्यावरण और सुरक्षा संबंधी तथा अन्य मुद्दों पर विकासशील देशों की चिंताओं पर प्रकाश डालने का मौका मिला।

मैंने अपने भाषण में, सहस्त्राब्दि विकास दौर के निष्कर्षो पर सार्थक अनुवर्ती कार्रवाई करने की तत्काल जरूरत पर जोर दिया जिससे एक ऐसी विश्व-व्यापर व्यवस्था बनाई जा सके जो विकास को बढ़ावा दे सकें। मैंने मौजूदा प्रतिबद्धताओं का पालन करने तथा विशेषकर अल्प-विकसित देशों में विकास हेतु अतिरिक्त संसाधन पैदा करने के नए विचारों की जाचं करने की जरूरत पर बल दिया। मैंने सुझाव दिया कि यद्यपि क्योटो प्रोटोकोल की पुष्टि नहीं हो पाई हैं, फिर भी, जैसा की प्रोटोकोल में व्यवस्था की गयी हैं, प्रोत्साहनों और प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के जरिए स्वच्छ ऊर्जा विकास को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विकासशील देशों को उनके जैव-विविधता संसाधनों तथा उनके परंपरागत ज्ञान का इस्तेमाल करने के लिए समुचित प्रतिपूर्ति की जानी चाहिए। मैंने इस कटु सत्य की ओर ध्यान दिलाया कि यदि इन क्षेत्रों में तत्काल और स्पष्ट प्रगति नहीं होती तो विकासशील देशों में आर्थिक उदारीकरण तथा उत्तरदायित्वपूर्ण पर्यावरण उपायों के लिए राजनैतिक समर्थन जल्दी ही बिखर जाएगा।

जी-8 शिखर बैठक के अवसर पर मुझे ब्राजील तथा मैक्सिकों के राष्ट्रपतियों से मिलने का अवसर मिला। दोनों ही राष्ट्रपति इस बात पर सहमत थे कि विकासशील देशों की चिंताओं को प्रभावी ढंग से स्पष्ट करने के लिए विश्व व्यापर संगठन से जुडे मुद्दों पर एक स्ट्रेटेजिक गठबंधन बनाने की,जी-15 जैसे समूहों में प्रभावी सहयोग बढ़ाने और सयुंक्त राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने की ज़रूरत हैं।

जी-8 देशों की विस्तृत वार्ता विकसित और विकासशील देशों के बीच उच्चतम स्तर पर संपर्क बनाने का एक उपयोगी मंच बन सकती हैं। एवियान में पधारे कई प्रतिभागियों ने यह विचार प्रकट किया कि भविष्य में जी-8 की अध्यक्षता करने वाले देश इस पहल को जारी रखें।

मैंने प्रधान मंत्री वन ज्याबाओं के निमंत्रण पर इस वर्ष 22 से 27 जून तक चीन की यात्रा की। लगभग दस वर्ष के बाद भारत के प्रधान मंत्री की यह चीन की पहली यात्रा थी। इस यात्रा से मुझे चीन के नए नेतृत्व के साथ व्यक्तिगत तौर पर बातचीत करने का अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। चीन में मेरा बड़ी गर्मजोशी और शालीनता के साथ स्वागत किया गया तथा मुझे इस बात का विशिष्ट रूप से एहसास दिलाया गया कि वे भी हमारी तरह परस्पर सदभाव बनाने तथा हमारे द्विपक्षीय संबंधों में विविधता लाने के लिए पूरी तरह इच्छुक हैं। मेरी सभी बैठकों के दौरान आपसी विश्वास और समझ-बूझ पैदा करने की चल रही प्रक्रिया को मजबूत करने की दोनों पक्षों की प्रतिबद्वता को दोहराया गया।

हमने दस समझौतों पर हस्ताक्षर किए जिनकी सूची सदन के पटल पर रखी गई हैं। भारत-चीन संबंधों में पहली बार दो प्रधान मंत्रियों क्षरा एक संयुक्त घोषणा-पत्र में उन सिद्वांतों

और समान विचारों का उल्लेख किया गया हैं जिनसे हमारे द्विपक्षीय संबंधो के भावी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। इसमें बहुध्रुवता की ओर बढ़ते हुए रूख को मजबूत करने के लिए, विश्व व्यापार संगठन संबंधी मुद्दों पर और विकासशील देशों की चिंताओं पर हमारे दोनों देशों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मिलकर कार्य करने की प्रतिबद्वता की भी पुष्टि की गई हैं।

यह घोषणा –पत्र भारत-चीन सीमा प्रश्न के समाधान को दोनों देशों द्वारा दिए गए महत्व को परिलक्षित करता हैं। इस प्रश्न के अंतिम हल के सिद्वांतों पर कुछ समय से विचार-विमर्श चल रहा हैं। प्रधान मंत्री वन ज्याबाओं और मैं इस बात पर सहमत हुए कि समग्र द्विपक्षीय संबंधों के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में सीमा समाधान के ढांचे की खोज के जरिए इन चर्चाओं को एक नई गति प्रदान की जानी चाहिए। हमने इस प्रयोजन के लिए विशेष प्रतिनिधि नियुक्त किए हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हमारे विशेष प्रतिनिधि होंगे। चीन ने अपनी ओर से अपने सबसे वरिष्ठ उप-विदेश मंत्री को नियुक्त किया हैं। प्रधान मंत्री वन ज्याबाओं तथा मैं इस बात पर भी सहमत हुए कि वास्तविक नियंत्रण रेखा के स्पष्टीकरण से संबंधित संयुक्त कार्य सहज रूप से जारी रहे तथा सीमा क्षेत्रों में बनी शांति और अमन-चैन को बरकरार रखा जाए।

हमारे द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों पर विशेष बल दिया गया। मेरी यात्रा के दौरान चीन में सी.आई.आई., फिक्की तथा एसोचम (ASSOCHAM) के वरिष्ठ व्यवासियों का एक बड़ा शिष्टमंडल मौजूद था। मैंने बीजिंग तथा शंघाई में भारत और चीन के व्यवसायियों की दो बैठकों को सबोधित किया जिनमें बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। हमारे वाणिज्य और उद्योग मंत्री बीजिंग में चीन के संबद्व मंत्रियों से मिले। उन्होंने संबंधित एजेंसियों तथा चीन के व्यवसायियों के साथ भी गहन विचार-विमर्श किया। हमारे संचार,सूचना प्रौद्योगिकी तथा विनिवेश मंत्री ने भी इसी तरह शंघाई में उपयोगी बातचीत की।

दोनों ही पक्ष हमारे आर्थिक संबंधों की क्षमता से भली-भांति अवगत थे। यह द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग में संभावित प्रतिपूरक पहलुओं का पता लगाने के लिए एक संयुक्त अध्ययन दल गठित करने के निर्णय में परिलक्षित हुई। यह संयुक्त अध्ययन दल दोनों देशों की सरकारों को व्यापार बढ़ाने, निवेश को प्रोत्साहन देने तथा हमारे व्यापार समुदायों के बीच अधिक से अधिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए ठोस उपायों की सिफारिश करेगा। हमने आर्थिक संवाद एंव सहयोग तंत्र स्थापित करने का भी निर्णय लिया। जिससे इस क्षेत्र में हमारा समन्वय मजबूत हो।

एक और महत्वपूर्ण बात यह रही कि भारत-चीन सीमा पर नाथुला दरें से सीमा व्यापार संबंधी ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इससे भारत और चीन के बीच सीमा व्यापार के लिए एक तीसरा सीमा दर्रा नियुक्त हो गया हैं। इस ज्ञापन के साथ ही हमने एक ऐसी प्रक्रिया की भी शुरूआत कर दी हैं जिससें भविष्य में भारत-चीन संबंधों में सिक्किम एक मुद्दा नहीं रहेंगा।

तिब्बत के संबंध में, मैं इस सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हमारी दशकों पुरानी नीति में कोई बदलाव नहीं आया हैं। हमने कभी भी इस बात पर संदेह व्यक्त नहीं किया कि तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र चीन लोक गणराज्य की भूमि का हिस्सा हैं। इसलिए इसे दोहराने के विरूद्व कोई तर्क नहीं दिया जा सकता। हमने श्रद्वेय दलाईलामा अथवा तिब्बती शरणार्थियों की

भारत में उपस्थिति के बारे में कोई नई बात नहीं कही हैं । मेरी यात्रा के दौरान हमारे सांस्कृतिक संबंधों को भी नए सिरे से बढ़ावा मिला । हम दिल्ली और बीजिंग में सांस्कृतिक केन्द्र स्थापति करने पर सहमत हुए हैं । मैंने बीजिंग विश्वविद्यालय में एक भारतीय अध्ययन केन्द्र का उदघाटन किया तथा इस केन्द्र को चलाने के लिए भारत की आरे से कुछ अंशदान देने की घोषणा की । हमने अगले वर्ष पंचशील, जो कि भारत-चीन संबंधों की एक आधारशिला हैं, की 50 वीं वर्षगांठ मनाने पर सहमति व्यक्त की हैं । मुझे लोयांग में व्हाइट हार्स टेंपल जाने का सुअवसर मिला जो भारत से चीन आने वाले प्रथम बौद्व भिक्षुओं के आगमन का प्रतीक हैं तथा जो हमारे संबंधों के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयाम को रेखांकित करता हैं । चीनी पक्ष कैलाश मानसरोवर यात्रा हेतु अतिरिक्त मार्ग खोलने के मेरे सुझाव पर विचार करने पर भी सहमत हुआ हैं । मेरी इस यात्रा के दो उद्देश्य पूरे हो गए – चीन के नए नेतृत्व के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापति करना, और हमारी विविध द्विपक्षीय सहयोग को नई गति प्रदान करना। हम चीन से इस बात का सहमत हैं कि हम सौहार्दपूर्ण चर्चाओं के जरिए अपने मतभेदों को दूर करने के प्रयासों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में परस्पर लाभदायक संबंध बनाए रखेंगे । मैं इन सभा यात्राओं के नतीजों से संतुष्ट हूं । जर्मनी के साथ हमारी वार्ता सुदृढ़ हुई हैं । राष्ट्रपति पुतिन एक बड़े बहुपक्षीय कार्यक्रम के मेज़बान के रूप में अपनी व्यस्तताओं के बावजूद पहले ही दिन आधी रात के बाद मेरे साथ द्विपक्षीय बैठक करने के लिए आए । यह इस बात का सूचक हैं कि वे हमारे द्विपक्षीय संबंधो को कितना महत्व देते हैं । राष्ट्रपति शिराक ने जी-8 विस्तृत वार्ता का इस ढंग से सचांलन किया जिससे विकासशील देश होने के नाते हमारे विचारों का मूल महत्व उजागर हुआ । चीन के साथ आपसी विश्वास और समझबूझ बढ़ाने की दिशा में प्रगति हुई हैं ।

जिन नेताओं से भी मैं मिला, सभी ने स्वाभाविक रूप से दक्षिण एशिया की स्थिति में रूचि दिखाई । मुझे यह देखकर खुशी हुई कि हमने पाकिस्तान की ओर मित्रता का जो हाथ बढ़ाया है, उसका सभी नेताओं ने समर्थन किया और सराहना की तथा यह आशा व्यक्त की कि पाकिस्तान भी इसका प्रत्युत्तर देगा । सभी ने आतंकवाद के खतरे की कड़े शब्दों में निंदा की । मैं यह समझता हूं कि मेरे वार्ताकार क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति को बढावा देने की हमारी नीति को पूरी तरह से समझते हैं ।

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal) : Sir, I would like to suggest for your consideration and for the consideration of the Government that this is a very important visit and, for the first time, a Joint Declaration has been signed by the two Prime Ministers - of China and India. Joint Declaration has been laid on the Table of the House. We have not yet got the opportunity of studying it. Therefore, my respectful submission to you is that kindly allow us to have a full-fledged discussion on the statement of the Prime Minister on a date convenient to the Prime Minister. If you kindly agree to it, we can suggest that let there be a full-fledged discussion on this statement. This is my submission for your consideration.

श्री सभापति: मैं इस पर विचार करूंगा ।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री तथा संसदय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज): सर, हमें स्वीकार हैं ।....(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : ठीक हैं, स्वीकार हो गया तो अब विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं हैं ।...(**व्यवधान**)...

Shri Annasaheb M.K. Patil to move Government Motion.

GOVERNMENT MOTION

For consideration of progress of implementation of Part IX and Part IX-A of the Constitution

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT (SHRI ANNASAHEB M.K. PATIL) : Sir, I, on behalf of my senior colleague, Shri Kashiram Rana, move the following Motion:

> "That this House to consider the progress of implementation of Part IX and Part IX-A of the Constitution dealing with Panchayats and Municipalities as institutions of self-government during the last ten years."

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal) : Sir, on procedural matter, I would like to point out that this is a Motion moved by the Government and normal practice is that mover of the Motion makes a statement that why he has moved this Motion; what is the progress that has been made. Firstly, the Minister is not here. Respectfully, I would like to submit, Sir, if the Minister is busy in Lok Sabha, we could have discussed it on some other date. Even if the Minister has come without preparation and introducing the motion -- what is the progress that has taken place in the last ten years -- let the Government give us a statement.

SHRI ANNASAHEB M.K. PATIL: Sir. I am prepared to give a statement.

MR. CHAIRMAN: He is prepared to give a statement.